संजय की कलम से ..

दृष्टि बनती है दृष्टिकोण से

जिन्होंने जीवशास्त्र पढ़ा है, इंसान के चेहरे को माइक्रोस्कोप से देखा है, उन्हें पता है कि हमारे रोम, जिनसे पसीना निकलता है, वहाँ खड्डे ही खड्डे हैं। जिसको हम सुन्दर चेहरा समझते हैं, वह कीटाणुओं से भरा पड़ा है। शरीर के अन्दर कीड़े, रोगाणु और गंदगी भरी पड़ी है। यह तो चमड़ी रूपी अच्छे से प्लास्टिक से ढका हुआ है, जो हमें कुछ मालूम नहीं पड़ता। संडास में जो कुछ होता है, वो सब इस शरीर में है। कचरेदान में जो कचरा डालते हैं, थूकदान में जो कुछ थूकते हैं वह सब इसमें है। संसार की कौन-सी गंदगी है जो इसमें नहीं है? लेकिन वह सब कचरा, गंदगी एक अच्छे-से, रंगीन प्लास्टिक से ढका हुआ है। जिस व्यक्ति का यह दृष्टिकोण है कि यह शरीर बाहर से देखने में सुन्दर है लेकिन अन्दर की वास्तविकता जान लेने के बाद क्या उसको शरीर के प्रति आकर्षण होगा? कभी भी नहीं होगा। इसलिए दृष्टि तब तक नहीं बदलेगी जब तक दृष्टिकोण नहीं बदलेगा।

जो कुछ भी पहले हम बाहर से देखते हैं, वह सन्देश के रूप में हमारे मन में जाता है। मान लीजिये, छह फुट के एक आदमी को हमने देखा। यह पुरुष है या स्त्री है, वह हमें पता पड़ा। आँखें तो हमारी छोटी हैं लेकिन आदमी छह फुट का है। फिर हमने उसको देखा कैसे? हमारे मस्तिष्क पर उसका बहुत छोटा-सा प्रतिबिम्ब पड़ता है। उसका रंग क्या है, रूप क्या है, चेहरे के लक्षण क्या हैं, उसकी बनावट क्या है, उसकी आकृति-प्रकृति कैसी है – यह चित्र चित्रित होता है। सन्देश मस्तिष्क को पहुँचने के बाद में आत्मा इन सबका विश्लेषण करती है कि यह क्या है, क्या नहीं है। यह जो विश्लेषण (interpretation) की अवस्था है, जिसको हम विश्लेषण की प्रक्रिया कहते हैं, जब तक यह परिवर्तन नहीं होगी तब तक दृष्टि परिवर्तन नहीं हो सकती। बाहर से जो सन्देश आया वह उद्दीपन (stimulus) है, यह पहुँचने के बाद वहाँ से प्रतिक्रिया (response) आती है कि यह छह फुट का मनुष्य है, पुरुष है या स्त्री है। यह फलानी जगह का रहने वाला है या वाली है। इसको मैंने कई साल पहले देखा था। इसका नाम यह है। उसका वो सारा रिकॉर्ड खोलकर चित्रित करता है। उस आदमी का नाम या सारा परिचय तो उसके चेहरे पर नहीं लिखा रहता। मन के अन्दर या आत्मा के अन्दर जो सारा रिकॉर्ड है, उससे तुलना करके आत्मा उसको पहचानने की कोशिश करती है। अन्दर की जो प्रतिक्रिया है, प्रत्युत्तर है, बाहर का जो

शेष पृष्ठ 21 पर

अमृत-सूची

- सपने कौन देखता है? (सम्पादकीय) 2
- पुरुषोत्तम संगमयुग और राजयोग द्वारा अनुसंधान . . . 5
- 'पत्र' सम्पादक के नाम 8
- ईमानदारी 9
- खुशी के आँसू 12
- और मैं संन्यासी से पक्का ब्रह्माकुमार बन गया 13
- बाल संस्कार निर्माण 17
- सांच बराबर तप नहीं 19
- सर्व संबंध भगवान से . . . 20
- न दुःख दो, न दुःख लो . . 22
- असत्य से सत्य की ओर . . 24
- आइये अभिनय करना सीखें 27
- सचित्र सेवा समाचार 28
- लैटिन अमेरिका में मैंने देखी अध्यात्म के प्रति अनोखी . 30
- सचित्र सेवा समाचार 32

सदस्यता शुल्क

भारत	वार्षिक	आजीवन
ज्ञानामृत	70 /-	1,500/-
वर्ल्ड रिन्युअल	70/-	1,500/-
विदेश		
ज्ञानामृत	700 /-	7,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	700/-	7,000/-

शुल्क केवल '**ज्ञानामृत**' अथवा '**द वर्ल्ड रिन्युअल**' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन-307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

- शुल्क के लिए सम्पर्क करें -
09414006904, 09414154383